इस दशक के नेता

नरेन्द्र मोदी

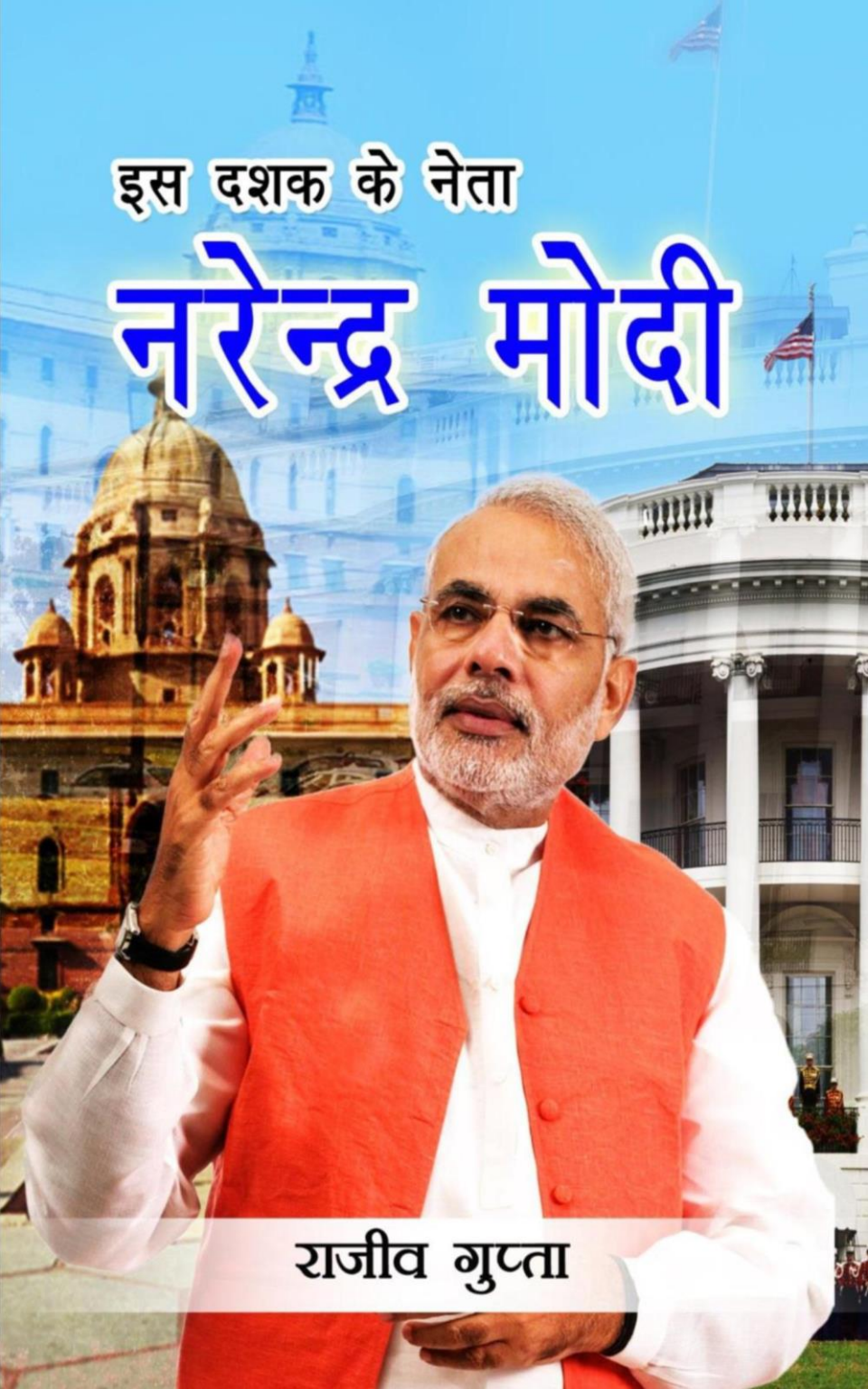

राजीव गुप्ता

इस दशक के नेता
नरेन्द्र मोदी...

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-12-8

Price: ₹ 215.00

The opinions/ contents of the book is political satire and individual opinions/ thoughts of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher. The book is a political satire and personal thoughts of author and written in sole with the purpose of entertainment of readers. The aim of this book is not to criticize/ insult any political entity, individual or party. The book does not make any political, legal, social claim or standing.

Printed in India

इस दशक के नेता नरेन्द्र मोदी

राजीव गुप्ता

"हमसफर के लिए"

अपनी बात

नरेन्द्र मोदी के जीवन से जुड़ी काफी पुस्तकें पहले भी लिखी जा चुकी हैं और आगे भी लिखी जाती रहेंगी। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए भी नरेन्द्र मोदी अपने अच्छे कामों की वजह से कम, अपने राजनीतिक विरोधियों के उनके खिलाफ लगातार किये जा रहे दुष्प्रचार की वजह से देश–विदेश में चर्चा का विषय बन गए, लेकिन ऐसा नहीं था कि उनके किये गए अच्छे कार्यों का कहीं भी मूल्यांकन नहीं हो रहा था। गुजरात की जनता ने उनके बेहतर कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उन्हें लगातार तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की बागडोर सौंपी। भारतीय जनता पार्टी ने जब सन् २०१३ में जब उन्हें प्रधान मंत्री पद के लिए अपना उम्मीदवार नियुक्त किया, तब से लेकर आज तक नरेन्द्र मोदी लगातार न सिर्फ अपने राजनीतिक विरोधियों के निशाने पर रहे हैं, उन्हें समय–समय पर अपनी पार्टी के अंदर और पार्टी के सहयोगी दलों का भी हल्का–फुल्का विरोध झेलना पड़ा है। लेकिन गुजरात में किये जा रहे अच्छे कामों की भनक देश के अन्य भागों में पहुँचने में देर नहीं लगी और देश की जनता ने उस दिन ही नरेन्द्र मोदी को अपना नेता तय कर लिया था, जिस दिन पार्टी ने उनके नाम पर प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी की आधिकारिक तौर पर मुहर लगाई थी।

नरेन्द्र मोदी पर राजनीतिक विरोधियों के हमले पहले भी हो रहे थे, लेकिन उन हमलों की धार तब और तेज हो गयी, जब पार्टी ने उन्हें अपना आधिकारिक तौर पर प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार नियुक्त कर दिया। इसके कई कारण थे, जिनका जिक्र इस पुस्तक के अलग–अलग लेखों में किया गया है। नरेन्द्र मोदी के विरोध का जो सबसे प्रमुख कारण था, वह यही था कि सभी राजनीतिक विरोधी इस बात पर बिलकुल एकमत थे कि मोदी आये तो उनकी बरसों से चल रही राजनीतिक दुकानें जरूर बंद हो जाएंगी। देश की सबसे

पुरानी राजनीतिक पार्टी काँग्रेस से लेकर वे सभी क्षेत्रीय राजनीतिक दल जो बरसों से जाति–पाति और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के सहारे अपनी राजनीतिक दुकानें सफलतापूर्वक चला रहे थे, अचानक ही अपने राजनीतिक वजूद को खतरे में पड़ता देखने लगे और उनके अंदर एक अजीब तरह की सिहरन और बौखलाहट साफ देखी जा सकती थी। ऊपर से तो कोई भी राजनीतिक विरोधी ''मोदी लहर'' की बात मानने को तैयार नहीं था, लेकिन अंदर से सबके सब बुरी तरह हिले हुए थे। इस घबराहट के चलते अलग–अलग राजनीतिक दलों ने अलग–अलग चुनावी चालें चलीं, लेकिन १६ मई २०१४ को जनता ने जब फैसला सुनाया तो किसी की एक न चलीं। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी विरोधी दलों का उनके खिलाफ दुष्प्रचार पहले की ही तरह जारी रहा – अब विरोधियों में बौखलाहट के साथ–साथ सत्ता छिन जाने की झुंझलाहट भी आ गयी थी। विरोधियों ने पिछले ६० सालों में जिस तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग और मीडिया को पोषित किया था, उनका दुष्प्रचार भी मोदी के खिलाफ बदस्तूर जारी था, क्योंकि जो सुख–सुविधाएँ इस वर्ग ने भोगी थीं, वे भी यकायक उनके हाथों से रातों–रात फिसलकर निकल गयीं थीं। इसी दुष्प्रचार को झेलते हुए मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने हरियाणा, जम्मू–कश्मीर, झारखण्ड एवं महाराष्ट्र में विजय प्राप्त करके अपनी सरकारें बनायीं। दिल्ली के चुनावों में हालांकि केजरीवाल ने जो मुफ्तखोरी का सब्जबाग दिल्ली की जनता को दिखाया था, उसके चलते वह भाजपा के विजय रथ को रोकने में कामयाब भी हुए, लेकिन छलावे से प्राप्त की गयी दिल्ली की यह सफलता मोदी की लोकप्रियता को कम नहीं कर सकी, जिसका प्रमाण यही है कि इतने प्रचंड बहुमत की सरकार होने के बावजूद केजरीवाल जी हमेशा ''मोदी फोबिआ'' से ही पीड़ित नजर आये और अपनी सभी प्रशासनिक नाकामियों के लिए मोदी को ही जिम्मेदार ठहराने लगे। ''नाच न जाने आँगन टेढ़ा'' की कहावत मानों दिल्ली की सरकार और उनके मुख्यमंत्री पर पूरी तरह फिट बैठ रही थी। जब भी केजरीवाल जी या उनकी सरकार किसी गलत काम में फंसे नजर आते, उन्हें कुछ नहीं सूझता, बस उसके

लिए मोदी को ही जिम्मेदार बताकर अपनी जिम्मेदारी से छुटकारा पाने की कोशिश करने लगते। देखा जाए तो मोदी के लिए यह भी किसी उपलब्धि से कम नहीं था, जब किसी प्रदेश का मुख्यमंत्री अपनी असफलताओं को छिपाने के लिए मोदी के नाम का सहारा लेना शुरू कर दें।

नरेन्द्र मोदी के इर्द–गिर्द घूमती हुई राजनीति और उनके विरोधियों की चालबाजी और बौखलाहट जो २०१३ से लेकर २०१५ तक अपने चरमोत्कर्ष पर रही, उसी को आधार बनाकर मैंने कुछ रचनाएँ समय–समय पर लिखी हैं। इन रचनाओं में हास्य–व्यंग्य युक्त कवितायें और लेख भी शामिल हैं। हालांकि यह सभी रचनाएँ अलग–अलग समय पर लिखी गयी हैं, लेकिन इनकी ताजगी आज भी बरकरार है। अपनी २०० से ऊपर लिखी हुयी इन्हीं रचनाओं में से कुछ चुनी हुयी रचनाएँ मैं इस पुस्तक में शामिल कर रहा हूँ। आशा है कि पाठकों को यह प्रयास पसंद आएगा। पाठकों के सुझावों और प्रतिक्रियाओं की मुझे प्रतीक्षा रहेगी।

–राजीव गुप्ता

लेखक को जानें

पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट राजीव गुप्ता लेखन और पत्रकारिता से भी पिछले लगभग तीन दशकों से जुड़े हैं। धर्मयुग, हिंदुस्तान, माधुरी सारिका एवं इकोनोमिक टाइम्स समेत देश की लगभग सभी राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं और आकाशवाणी से उनकी ८०० से अधिक रचनाएँ हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित–प्रसारित हो चुकी हैं। एक साप्ताहिक समाचार पत्र और एक मासिक पत्रिका का काफी समय तक संपादन किया है। एक लघुकथा संग्रह का भी संपादन किया है। लेख, कहानियाँ और कवितायें सभी विधाओं में लिखते हैं।

- **ई–मेल :** rajeevgupta@educreation.in
- **ट्विटर :** @rajeevguptaca

अनुक्रमांक

क्र.	शीर्षक	पेज
01.	अपनी बात	
02.	इस दशक के नेता नरेन्द्र मोदी	01
03.	मोदी ''सांप्रदायिक'' क्यों हैं?	07
04.	हम यूपी को गुजरात नहीं बनने देंगे	09
05.	हम सब मोदी के डर से इतनी गलतियाँ कर रहे हैं।	10
06.	यही वे लोग हैं जो मोदी को हरायेंग?	12
07.	मोदी के प्रभाव से घबराये और बौखलाये हुये लोग	14
08.	मोदी अब तक जिंदा हैं, हम बेहद शर्मिन्दा हैं।	16
09.	मोदी को पी. एम. हर्गिज ना बनने दें।	18
10.	हम मोदी की सरकार नहीं बनने देंगे	20
11.	मोदी 272 से सीधे 370 पर कैसे पहुँच गए?	21
12.	मोदी को हल्के में मत लेना	23
13.	मोदी को अब्दुल्ला की खुली चुनौती	25
14.	''मोदी–लहर'' को थाम लेंगे हम।	27
15.	मनमोहन की नाकामियों के लिए मोदी जिम्मेदार?	30
16.	केजरीलाल फेल – काँग्रेस ने शुरु किया सांप्रदायिकता का खेल	32
17.	नहीं बनेगी अबकी बार मोदी की सरकार?	34
18.	क्या मोदी टिक पायेंगे केजरीवाल के सामने?	35
19.	बहुत मंहगी पड़ेगी ये "मोदी ब्रांड" चाय।	37
20.	"मोदी का रास्ता रोको" अभियान।	39
21.	मोदी से 7 तीखे सवाल।	42
22.	मीडिया अटेंशन पाने के लिये किये जा रहे हैं मोदी पर हमले?	44
23.	पी. एम. पद की दौड़ में मोदी किस नंबर पर?	48
24.	रोक नहीं सकता अब कोई मोदी की सरकार।	51
25.	किसके इशारे पर किये जा रहे हैं मोदी पर हमले?	52
26.	मोदी हराओ – काँग्रेस बचाओ।	55
27.	मोदी को हराने की पाकिस्तानी साज़िश का पर्दाफाश	58

28.	मोदी के PM बनने से कौन भयभीत है?	60
29.	मोदी ने फेरा इनके सपनों पर पानी।	62
30.	बौखलाये हुये चूहे "पिकनिक" और "हनीमून" नहीं मनाते	65
31.	प्रियंका का जादू सर चढ़कर बोलेगा?	68
32.	मोदी की सरकार – बाकी सब लाचार।	70
33.	मोदी की जीत से दहशत में है पाकिस्तान।	71
34.	मोदी विरोधियों का मानसिक संतुलन क्यों बिगड़ रहा है?	74
35.	क्या मोदी अपना ''राज–धर्म'' निभा पायेंगे?	77
36.	मोदी विरोधियों के ''अच्छे दिन'' आख़िर कब आयेंगे?	80
37.	मोदी जी ने कैसे बजाया ''सेक्युलर'' लोगों का ढोल?	83
38.	अरे मोदी जी.....यह आपने क्या कर दिया।	86
39.	इसलिये मच रहा है संसद में हंगामा।	89
40.	पाकिस्तान के बचाव में क्यों उतरी काँग्रेस?	91
41.	मोदी के खिलाफ की जा रही साज़िश का पर्दाफाश।	94
42.	मोदी ने क्या किया अब तक?	97
43.	मोदी सरकार की कामयाबी से बौखलाया विपक्ष।	100
44.	क्या है मोदी पर काँग्रेस के हमलों का सच?	104
45.	''सूटकेस'' वालों के अच्छे दिन कब आयेंगे?	107
46.	Lalitgate पर काँग्रेस से 7 सवाल	110
47.	काला धन लेकर कौन भागा विदेश?	112
48.	आडवाणी की ''इमरजेंसी'' पर केजरीवाल बेचैन।	113
49.	''छलीबाबा'' और उनके 66 चोर।	116
50.	दिल्ली के जी का जंजाल केजरीवाल – केजरीवाल।	119
51.	थाइलैंड की मस्ती – नहीं पड़ेगी सस्ती।	123
52.	गजेंद्र की हत्या के लिये मोदी जिम्मेदार?	124
53.	दिल्ली का ठग कौन है?	127
54.	क्या 5 साल चल पायेगी ''आप'' की सरकार?	129
55.	मोदी जी दिल्ली के लिए भी कुछ समय निकालें	123

इस दशक के नेता नरेन्द्र मोदी

2013 से लेकर 2015 तक भारत की राजनीति में कुछ ऐसा जलजला आया है, जो पहले कभी नहीं देखा गया। भारतीय जनता पार्टी ने जिस रस्साकशी के बीच गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द मोदी को 2014 के लोकसभा चुनावों के लिये प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार मनोनीत किया। उसका विरोध पार्टी के भीतर भी हुआ और पार्टी के बाहर भी। हालांकि जो लोग पार्टी के अंदर उनकी उम्मीदवारी का विरोध कर रहे थे। उनके विरोध के कारण उन लोगों से बिल्कुल अलग थे, जो पार्टी के बाहर से उनकी उम्मीदवारी का विरोध कर रहे थे। देश कॉंग्रेस के पिछले 60 सालों और खासकर पिछले 10 सालों के अभूतपूर्व कुशासन और भ्रष्टाचार से पूरी तरह उकता गया था और किसी बहुत बड़े राजनीतिक बदलाव की तरफ बेसब्री से देख रहा था। भारतीय जनता पार्टी के अंदर और बाहर दोनों तरफ के विरोध के बावजूद अगर नरेन्द्र मोदी को यह जिम्मेदारी सौंपी गयी तो उसमें देश की जनता की आकांक्षाओं के दबाव का भी बहुत बड़ा हाथ था।

सभी तरह के भ्रष्टाचार और कुशासन के बावजूद कॉंग्रेस को यह भरोसा था कि, अगर भारतीय जनता पार्टी मोदी के अलावा किसी और को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार मनोनीत करेगी तो देश की जनता लोकसभा चुनावों में पहले की तरह खंडित जनादेश देगी और ऐसी किसी भी सूरत में कॉंग्रेस के लिये सरकार बनाना हमेशा ही आसान रहा है और कॉंग्रेस पार्टी ने केन्द्र में लगभग 60 सालों तक इसी तिकड़मबाजी का सहारा लेकर ही सत्ता का सुख भोगा है। जनता की मोदी को लेकर जो आकांक्षाऐं थी, उसे कॉंग्रेस और उसके सभी सहयोगी दल ना सिर्फ पूरी तरह भांप चुके थे,

उसकी घबराहट भी उन लोगों में साफ देखी जा सकती थी। ऊपर से तो यह लोग किसी तरह की ''मोदी लहर'' की बात को सिरे से नकार रहे थे, लेकिन जिस तरह से इनका विरोध मोदी को लेकर जारी था, उसे देखकर सब कुछ एकदम साफ नज़र आ रहा था कि, मोदी की उम्मीदवारी का मतलब इन सबका राजनीतिक सफाया होने जैसा साबित होगा।

अपने दुष्प्रचार के बल पर कॉंग्रेस और उनके सहयोगी राजनीतिक दलों ने पिछले 67 सालों में भारतीय जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर ''साम्प्रदायिकता'' का ठप्पा लगा दिया था और नरेन्द्र मोदी के नाम पर तो सारे के सारे राजनीतिक दल इतने अधिक बौखला गये थे, मानो उनका अपना राजनीतिक वजूद ही खतरे में पड़ने वाला हो।

भारतीय जनता पार्टी के कुछ अपने सहयोगी दल भी मोदी की उम्मीदवारी को लेकर खुश नहीं थे, क्योंकि उन्हें भी यह गम सता रहा था कि, अगर मोदी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार हुए तो भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत से जीतने से कोई नहीं रोक सकता और ऐसी हालत में सहयोगी दलों के पास सरकार के अंदर मोल भाव करने की बहुत अधिक गुंजाईश नहीं रहती है। पार्टी के अंदर अपने ही नेताओं का विरोध भी मोदी ने इसीलिये झेला क्योंकि बहुमत अगर मोदी के नाम पर मिलता है तो बाकी सबकी भूमिका, महत्व और योगदान अपने आप ही कम हो जाता है। हालांकि पार्टी के अंदर इस बात को भी स्वीकारा जा रहा था कि, भारतीय जनता पार्टी को अगर स्पष्ट बहुमत चाहिये, तो मोदी के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

कुल मिलाकर हालात ऐसे बनें कि 2013 तक जो राजनीति ''कांग्रेस केन्द्रित'' ही रही थी, वह यकायक ''मोदी केन्द्रित'' हो गयी और क्या पक्ष और क्या विपक्ष सब लोगों की जुबान पर किसी ना किसी रूप में मोदी का ही जादू चढ़कर बोलने लगा। विरोधियों के पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिये उन्हें मन मारकर मोदी के खिलाफ ही मैदान में उतरना पड़ा और 16 मई 2014 को जो नतीजे आये उन्हें देखकर किसी

को भी हैरानी नहीं हुई, क्योंकि उन लोगों ने संभवत् अपनी हार का इससे भी अधिक बुरा आकलन कर रखा था। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह पहले लोकसभा चुनाव थे, जहां काँग्रेस पार्टी को यह बात चुनावों से पहले मालूम थी कि, किसी भी सूरत में 2014 में उसकी सरकार नहीं बनने जा रही है। अन्ना आन्दोलन के भ्रष्टाचार के मुद्दे को भुनाकर उसके जरिये सत्ता हथियाने की गरज से बनाई गयी आम आदमी पार्टी ने भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की कि, कैसे भी हो मोदी और भाजपा की जड़ों को कमजोर किया जाये, क्योंकि सिर्फ खंडित जनादेश की हालत में ही इस पार्टी की केन्द्र की सत्ता में कोई भूमिका हो सकती थी, लेकिन जनता अपनी सरकार और नेता का चुनाव बहुत पहले कर चुकी थी, जो चुनाव हुए और जो नतीजें आये वे महज एक औपचारिकता मात्र थे। 16 मई को वही हुआ जो देश की जनता बहुत पहले निश्चित कर चुकी थी।

इस सारी कहानी को लिखने का मतलब यह नहीं है कि, नरेन्द्र मोदी कोई जादूगर हैं और सब लोग बिना किसी वजह के सम्मोहित होकर उनके पीछे हो लिये। नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता के एक से अधिक कारण हैं और उनमें वह कारण नहीं है, जिसका राजनीतिक विरोधी दुष्प्रचार करते आये हैं। राजनीतिक विरोधियों का दुष्प्रचार यह था कि, गुजरात दंगों की वजह से मोदी ''हिन्दू ह्रदय सम्राट'' बन गये हैं, लेकिन यह बात हकीकत से कोसों दूर थी, क्योंकि अगर यह दुष्प्रचार सही होता तो इतना बड़ा बहुमत आता ही नहीं। मोदी की सफलता में जिस बात ने निर्णायक भूमिका निभाई वह यह थी कि, आम जनता जाति और धर्म की चार दीवारियों से पहली बार बाहर निकल पड़ी थी और पिछले 67 सालों में जो जिस राजनीतिक पार्टी से जुड़ा था, उसने उस पार्टी से पल्ला झाड़ लिया और मोदी की सफलता में योगदान देने के लिये आगे आ गया। इस सम्बंध में मुझे सोशल मीडिया छाई रही उस ख़बर की खास याद आ रही है जो कुछ इस तरह से है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में मोदी जी की चुनाव पूर्व किसी रैली का आयोजन होना था। स्थानीय आयोजक किसी कालेज

इस दशक के नेता

नरेन्द्र मोदी

नरेन्द्र मोदी के इर्द–गिर्द घूमती हुई राजनीति और उनके विरोधियों की चालबाजी और बौखलाहट जो २०१३ से लेकर २०१५ तक अपने चरमोत्कर्ष पर रही, उसी को आधार बनाकर मैंने कुछ रचनाएँ समय–समय पर लिखी हैं। इन रचनाओं में हास्य–व्यंग्य युक्त कवितायें और लेख भी शामिल हैं। हालांकि यह सभी रचनाएँ अलग–अलग समय पर लिखी गयी हैं, लेकिन इनकी ताजगी आज भी बरकरार है।

पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट राजीव गुप्ता लेखन और पत्रकारिता से भी पिछले लगभग तीन दशकों से जुड़े हैं। धर्मयुग, हिंदुस्तान, माधुरी सारिका एवं इकोनोमिक टाइम्स समेत देश की लगभग सभी राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं और आकाशवाणी से उनकी ८०० से अधिक रचनाएँ हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित–प्रसारित हो चुकी हैं। एक साप्ताहिक समाचार पत्र और एक मासिक पत्रिका का काफी समय तक संपादन किया है। एक लघुकथा संग्रह का भी संपादन किया है। लेख, कहानियाँ और कवितायें सभी विधाओं में लिखते हैं।

लेखक से सम्पर्क हेतु:
rajeevg@hotmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-12-8
9 788119 927128